

# श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

## देवी स्तुति



जय जय जगजननि देवि सुर -नर -मुनि -असुर -सेवि,  
भुक्ति- मुक्ति -दायिनी, भय -हरणि कालिका।  
मंगल - मुद- सिद्धि- सदन, पर्वशर्वरीश - वदनि,  
ताप- तिमिर- तरुण- तरणि- किरणमालिका ॥1 ॥

वर्म , चर्म कर कृपाण, शूल- शेल - धनुषबाण,  
धरणि दलनि दानव - दल, रण - करालिका।  
पूतना- पिशाच- प्रेत- डाकिनि- शाकिनि - समेत,  
भूत- ग्रह- बेताल- खग- मृगालि- जालिका ॥2 ॥

जय महेश -भामिनी, अनेक- रूप - नामिनी,  
समस्त - लोक - स्वामिनी, हिमशैल - बालिका।  
रघुपति - पद परम प्रेम, तुलसी यह अचल नेम,  
देहु है प्रसन्न पाहि प्रणत- पालिका ॥3 ॥